

नाम : डॉ लोकाश्वर प्रसाद सिन्हा

महाविद्यालय का नाम : दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

संकाय : कला

पद नाम : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

विषय : हिन्दी में रोजगार के अवसर

दिनांक :18/07/2023

हिन्दी में रोजगार के अवसर

विश्व भर में जिस तरह हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है उसी तरह हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ते जा रहे हैं। केन्द्र सरकार के विभिन्न विभाग, राज्य सरकारों (हिन्दी भाषी राज्यों) के विभिन्न विभागों में हिन्दी भाषा में काम करना अनिवार्य हो गया है।

चीनी भाषा के बाद हिन्दी दुनिया भर में सबसे अधिक बोली जाने वाली दूसरी भाषा है। भारत और विदेशों में हिन्दी बोलने वाले लोगों की संख्या करीब 500 मिलियन है। यही नहीं हिन्दी भाषा को अच्छी तरह समझने वाले लोगों की संख्या करीब 900 मिलियन है।

सभी भाषाओं का स्वयं का अपना स्वरूप है जिनकी जड़ें किसी न किसी भाषा से जुड़ी हुई हैं। इसी तरह हिंदी भाषा का जन्म शास्त्रीय संस्कृत भाषा से हुआ है। हिन्दी की अधिकतर शब्दावली संस्कृत से संबंधित है। इसके व्याकरण में भी समानताएं हैं। हिन्दी को देवनागरी लिपि भी कहते हैं।

आधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी

भारत के संविधान के (अनुच्छेद 343 (1) के द्वारा देवनागरी लिपि या हिन्दी को संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची की पच्चीस भाषाओं में एक हिन्दी है। भारत के संविधान ने सरकारी कार्यप्रणाली के लिए दो भाषाओं को मान्यता प्रदान की है जिसमें पहली हिन्दी और दूसरी भाषा अंग्रेजी है।

स्वतंत्रता प्राप्त के बाद यह निश्चित किया गया था कि सन् 1965 से भारत की पूरी कार्यप्रणाली हिन्दी भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची की पच्चीस भाषाओं में एक हिंदी है। भारत के संविधान ने सरकारी कार्यप्रणाली के लिए दो भाषाओं को मान्यता प्रदान की है जिसमें पहली हिन्दी और दूसरी भाषा अंग्रेजी है।

स्वतंत्रता प्राप्त के बाद यह निश्चित किया गया था कि सन् 1965 से भारत की पूरी कार्यप्रणाली हिंदी भाषा में संपादित होगी और (अनुच्छेद 344 (2) और अनुच्छेद 351 के निर्देशों के अनुसार राज्यों को अपनी भाषा के चयन का अधिकार होगा, लेकिन आधिकारिक भाषा अधिनियम 1963 के तहत सभी आधिकारिक उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी का भी प्रयोग में लाने का निश्चय किया गया। यही कारण है कि अंग्रेजी आज भी आधिकारिक दस्तावेजों, अदालतों आदि में प्रयोग की जाती है।

भारत के कई राज्यों में हिन्दी को आधिकारिक भाषा में रूप में मान्यता मिली हुई है। ऐसे राज्य हैं— बिहार, झारखंड, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और दिल्ली आदि। इसके साथ ही इन राज्यों की अपनी एक सह-सरकारी भाषा भी है, जैसे— उत्तर प्रदेश में उर्दू एक सहकारी भाषा है तो कई राज्यों में हिंदी को सह-भाषा का दर्जा दिया गया है।

हिन्दी एक वैश्विक भाषा

अच्छी बात यह है कि विदेशों में रहने वाली भारतीयों के बीच भारतीय संस्कृति व भाषा सीखने की रुचि बढ़ी है। यही कारण है कि कई विदेशी देशों ने भारतीय अध्ययनों को बढ़ावा देने के लिए अपने यहां हिंदी सीखने के लिए अध्ययन केंद्र स्थापित किए हैं।

इन संस्थानों में भारतीय धर्म, इतिहास और संस्कृति पर पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने के साथ-साथ हिंदी, उर्दू और संस्कृत जैसे कई भारतीय भाषाओं की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। वर्तमान के वैश्वीकरण और निजीकरण के समय में अन्य देशों के साथ भारत के बढ़ते व्यापारिक संबंधों ने एक-दूसरे देशों की भाषाओं को सीखने की आवश्यकता को और भी अधिक बढ़ा दिया है।

एक-दूसरे देश के साथ सहयोग एवं विकास की भावना के कारण हिंदी की लोकप्रियता अन्य देशों में बहुत अधिक बढ़ी है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण अमेरिका के कुछ स्कूलों ने फ्रेंच, स्पैनिश और जर्मन के साथ एक विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी को शुरू करने का फैसला है। इससे भी हिंदी को वैश्विक पहचान मिली है।

तकनीकी भाषा के रूप में हिन्दी

भारतीय भाषा हिन्दी के तकनीकी भाषा के रूप में विकास की शुरुआत 1991 में स्थापित इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग मिशन (टी.डी.आई.एल.) के साथ शुरू हुई। भारतीय भाषाओं की समृद्धि को देखते हुए इसे मिशन मानते हुए कई गतिविधियां शुरू की गईं। इसके बाद 1991 में यह निश्चित किया गया कि संवैधानिक रूप से हिन्दी सहित प्रत्येक स्वीकृत भाषाओं के लिए तीन मिलियन शब्द का संग्रह विकसित किया जाएगा। इसके बाद हिन्दी कॉरपोरेशन का विकास आई.आई.टी. दिल्ली को सौंपा गया।

1981–1919 के दौरान हिन्दी कॉरपोरा से संबंधित स्रोत किताबों, पत्रिकाओं, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र और सरकारी दस्तावेजों में प्रकाशित किए गए थे। इसे छह मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें सामाजिक विज्ञान, भौतिक–व्यावसायिक विज्ञान, सौंदर्यशास्त्र, प्राकृतिक विज्ञान, वाणिज्य, आधिकारिक और मीडिया भाषा और अनुवादित सामग्री शामिल हैं। शब्द स्तरीय टैगिंग के लिए सॉफ्टवेयर उपकरण, शब्द गणना, पत्र गणना, आवृत्ति गणना भी विकसित की गई हैं। विभिन्न संस्थानों द्वारा हिन्दी में पठनीय मशीन के लगभग 30 लाख शब्द विकसित किए गए हैं।

हिन्दी के विकास में हिन्दी वर्ड प्रोसेसर की भी बहुमूल्य भूमिका है। कई संस्थानों ने हिन्दी वर्ड प्रोसेसर का निर्माण कर हिन्दी के विकास को गति प्रदान की है। इसके साथ-साथ 1991 में सरकार द्वारा जी.आई.एस.टी., शेलिपी, सुलीपी, ए.पी.एस., अक्षर विकास कार्यक्रम के तहत नई संस्थानों (सिद्धार्थ 1983 में डी.सी.एम.), लिपी (हिन्दीट्रॉनिक्स 1983), आई.एस.एम., लिप ऑफिस (सी.डी.ए.सी., पुणे) के साथ कई अन्य संस्थानों ने भी हिन्दी वर्ड प्रोसेसर का भी निर्माण किया है। पुणे स्थित सी.डी.ए.सी. संस्थान ने जी.आई.एस.टी. प्रौद्योगिकी की शुरुआत की, ताकि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया जा सके। यह इनफॉर्मेशन इंटरचेंज, स्क्रीन पर उसका प्रदर्शन एवं विशेष फॉन्ट (आई.एस.एफ.ओ.सी.) के लिए भारतीय स्क्रिप्ट कोड का प्रयोग करता है। इसके साथ ही यह विभिन्न स्क्रिप्ट्स (आई.एन.एस.सी.आर.आई.पी.टी.) आदि के लिए कुंजीपटल ले-आउट का इस्तेमाल करता है।

हिन्दी भाषा में नौकरी या व्यवसाय के अवसर

विश्व भर में जिस तरह हिंदी की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है उसी तरह हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ते जा रहे हैं। केंद्र सरकार के विभिन्न विभाग, राज्य सरकारों (हिन्दी भाषी राज्यों) के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में काम करना अनिवार्य हो गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विभागों और केंद्रीय/राज्य सरकारों की इकाइयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, प्रबंधक (आधिकारिक भाषा) जैसे कई पद होते हैं, जहां नियुक्तियां की जाती हैं।

हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है और आमतौर पर इस दिवस को ही हिंदी भाषा की महत्ता, इसकी पहुंच, इसके सम्मान आदि को लेकर बात होती है। कोई दो राय नहीं कि हिंदी की लोकप्रियता दुनियाभर में बढ़ती है और इसके क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं।

यानी अब हिंदी केवल राजभाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक बाजार में भी अपनी जगह बन रही है। आइए जानते हैं हिंदी भाषा पर अच्छी पकड़ हो तो कहां-कहां आपको मौका मिल सकता है और आप अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं।

हिंदी अधिकारी – विभिन्न बैंक राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति करते हैं। हिंदी भाषा अधिनियम का प्रावधान है कि सभी संस्थानों में हिंदी अधिकारी की नियुक्ति होगी। भारत सरकार व निजी संस्थानों में हिंदी अधिकारी के रूप में काम करने का अवसर मिल सकता है। देश-विदेश के सरकारी संस्थानों में हिंदी सलाहकार के रूप में भी नियुक्ति हो सकती है।

अनुवादक व द्विभाषिया – प्रिंट मीडिया सहित कई सरकारी विभागों में अनुवादक व हिंदी लेखक के रूप में मौके उपलब्ध हैं। कई संस्थान अनुवादकों को कॉन्ट्रैक्ट आधार पर रोजगार देते हैं। अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में अपना लेख लिखने वाले जानेमाने अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के लेख का अनुवाद हिंदी में किया जाता है। हिंदी/अंग्रेजी में फिल्मों, विज्ञापनों की लिपियों का अनुवाद भी ऐसी ही काम है। इसी तरह द्विभाषी दक्षता के साथ कोई भी फ्रीलान्स अनुवादक के रूप में काम कर सकता है और अपनी ट्रांसलेशन कंपनी भी खोल सकता है।

मीडिय – टी.वी. और रेडियों चैनल्स और पत्रिकाओं/समाचार पत्रों के हिंदी संस्करणों में हुई बढ़ोत्तरी के कारण इन क्षेत्रों में भी नौकरियों के अवसर कई गुना बढ़े हैं। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादकों, पत्रकारों, संवाददाताओं, उप संपादक, प्रूफ रीडर, रेडियो जॉकी, एंकर आदि की आवश्यकता होती है। इन लोगों का अधिकांश कार्य हिंदी में होता है। हिंदी में शैक्षणिक योग्यता रखने के लिए साथ-साथ पत्रकारिता/जनसंचार में डिग्री/डिप्लोमा की योग्यता के साथ एक से अधिक स्थानों पर नौकरी का अवसर पर सकते हैं।

फ्रीलांसिंग व स्क्रिप्ट– फिल्मों, धारावाहिकों और विज्ञापन कंपनियों में स्क्रिप्ट राइटर्स की मांग कम नहीं है। प्रिंट मीडिया में भी क्रिएटिव व तकनीकी लेखकों की जरूरत बनी रहती है।

टीचिंग – टीचिंग का प्रोफेशन तो सदाबहार है। देश के प्रमुख स्कूल-कॉलेजों में नर्सरी से लेकर पीजी लेवल तक टीचिंग का स्कोप है, जबकि विदेशी संस्थानों में भी हिंदी अध्यापकों की नियुक्ति होती है। हिंदी से बीए व बीएड करने के बाद स्कूलों में हिंदी अध्यापक की नौकरी मिल जाती है। कॉलेज के स्तर पर अध्यापन करने वाले छात्रों को एमए के बाद एमफिल और पीएचडी करने के बाद कॉलेज में प्रवक्ता का पद मिल सकता है। पीएचडी होल्डर कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर देश में कहीं भी लेक्चरर की नौकरी पा सकते हैं। अध्यापन के लंबे अनुभव पर वे रीडर व प्रोफेसर भी बन सकते हैं।

इंटरनेट – आज हिंदी की कई वेबसाइट उपलब्ध हैं। विभिन्न हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के पोर्टल एवं ब्लॉग भी इंटरनेट पर हैं। ऐसे में पोर्टल पर भी जॉब के अवसर उपलब्ध होने लगे हैं।

कॉल सेंटर – डोमेस्टिक कॉल सेंटर्स में हिंदी के आधार पर भी नौकरी मिलने लगी है। टेलिकम्यूनिकेशन में भी हिंदी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है।

सॉफ्टवेयर – हिंदी सॉफ्टवेयर्स की जरूरत के मद्देनजर अब हिंदी भाषी छात्रों को भी इस क्षेत्र में अच्छे अवसर मिल रहे हैं।

प्रतियोगी परीक्षा – हिंदी से स्नातक करने के बाद कई प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होकर बैंक, न्यायिक सेवा, सिविल सर्विस और स्टेट सर्विस के अलावा रेलवे व बैंक आदि में भी नौकरी के बेहतर अवसर हो सकते हैं।

निजी टीवी और रेडियों चैनलों के आगमन और स्थापित पत्रिकाओं/समाचार पत्रों के हिंदी संस्करणों के विकास के कारण इन क्षेत्रों में भी नौकरियों के अवसर में कई गुना बढ़ोतरी हुई है। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादकों, पत्रकारों, संवाददाताओं, उप संपादक, प्रूफ रीडर, रेडियो जॉकी, एंकर आदि की आवश्यकता होती है। इन लोगों का अधिकांश कार्य भी हिंदी में ही होती है। हिंदी में शैक्षणिक योग्यता रखने के साथ-साथ पत्रकारिता/जनसंचार में डिग्री/डिप्लोमा की योग्यता के साथ अभ्यर्थी एक से अधिक स्थानों पर नौकरी का अवसर पा सकते हैं। इसके अतिरिक्त अभ्यर्थी रेडियों/टीवी/सिनेमा के क्षेत्र में स्क्रिप्ट लेखक/संवाद लेखक/गीतकार के रूप में उपलब्ध अवसर का लाभ उठा सकते हैं। इन क्षेत्रों में रचनात्मक, कलात्मक लेखन की मांग होती है जो अभ्यर्थी इन क्षेत्रों की डिग्री या डिप्लोमा हासिल कर स्वयं में विकसित कर सकते हैं।

इसके साथ ही प्रख्यात अंतर्राष्ट्रीय लेखक, जो अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में अपने लेख लिखते हैं उन लेखों का अनुवाद भी हिंदी में किया जा सकता है। हिंदी/अंग्रेजी में फिल्मों/विज्ञापनों की लिपियों का अनुवाद भी ऐसा ही कार्य है। इसी तरह द्विभाषी दक्षता रखकर कोई भी फ्रीलान्स अनुवादक के रूप में अपनी आजीविका अर्जित कर सकता है और अपनी अनुवाद कंपनियां भी स्थापित कर सकता है। ऐसी कंपनियां अनुबंध के आधार पर काम करती हैं और कई पेशेवर अनुवादकों को रोजगार प्रदान करती हैं। विदेशी एजेंसियों के पास अनुवाद परियोजनाओं के बहुत से अवसर उपलब्ध होते हैं। यह काम आसानी से इंटरनेट के माध्यम से किया जा सकता है।

पूरी दुनिया में सीस्ट्रान, एस.डी.एल. इंटरनेशनल, डेट्रॉइट ट्रांसलेशन ब्यूरो, प्रोज, इत्यादि कई कंपनियां कई भाषाओं में अनेक सेवाएं उपलब्ध कराती हैं, जिनमें से एक भाषा हिंदी है। अन्य कंपनियां इन कंपनियों से अनुबंध के आधार पर भाषा सेवाएं

मांगती हैं। आमतौर पर इन कंपनियों में कैरियर के अवसर स्थायी या फ्रीलांस अनुवादकों और दुभाषियों के रूप में उपलब्ध होते हैं।

हमने यह भी देखा है कि वैश्विक स्तर पर प्रकाशित की जाने वाली किताबों के प्रकाशक भी हिंदी भाषा लोगों के बीच पैठ बनाने की कोशिश कर रहे हैं। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि प्रमुख बहुराष्ट्रीय प्रकाशन संस्थानों ने न सिर्फ हिंदी भाषा में किताबों का प्रकाशन करना शुरू किया है बल्कि पुरानी और लोकप्रिय किताबों का बड़े पैमाने पर हिंदी अनुवादित कर प्रकाशित भी किया है। इसलिए बड़े प्रकाशन संस्थानों में अनुवादक, संपादक और संगीतकार के रूप में एक बहुत अवसर मौजूद होते हैं।

हिंदी भाषा में स्नातकोत्तर की योग्यता रखने वाले लोगों को विदेशी देशों में भी नौकरी की अवसर मिल सकता है। खासकर उन लोगों ने जिन्होंने अपनी पी.एच.डी. पूरी कर ली है। विदेशों विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाना या विदेशी भाषाओं के साथ-साथ दूसरे भाषा के रूप में हिंदी को पढ़ाकर अभ्यर्थी अपनी जीविका चल सकते हैं। भारत के विद्यालयों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में एक शिक्षक और प्रोफेसर के रूप में हिंदी पढ़ाने का कार्य शुरू से चल ही रहा है।